मलेरिया का टीका अभी नहीं

दुनिया का पहला मलेरिया टीका विकसित कर लिया गया है। मगर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि इसकी सीमित प्रभाविता को देखते हुए इसे पहले प्रायोगिक रूप से इस्तेमाल करके परीक्षण करने की ज़रूरत है। इस तरह के परीक्षण में तीन से पांच साल तक लगने की उम्मीद है। टीके के व्यापक उपयोग के बारे में फैसला इन परीक्षणों के परिणामों के आधार पर लिया जाएगा। यानी 3-5 साल और प्रतीक्षा करनी होगी।

ग्लैक्सो-स्मिथ-क्लाइन (जीएसके) द्वारा विकसित मलेरिया का टीका (मॉस्किरिक्स) सिद्धांततः दुनिया के लाखों-करोड़ों बच्चों को मलेरिया से बचा सकता है। इस वर्ष दुनिया भर में मलेरिया के 21.4 करोड़ नए मामले सामने आए थे और इस वजह से 4 लाख 38 हज़ार लोग जान से हाथ धो बैठे थे।

जीएसके ने इस टीके के जो परीक्षण किए थे उनमें पता चला था कि यह टीका अन्य रोगों के टीकों के बराबर कारगर नहीं है। जीएसके द्वारा 2011 व 2012 में किए गए परीक्षणों से पता चला था कि टीकाकरण के बाद 6 से 12 सप्ताह के बच्चों में मलेरिया का प्रकोप 27 प्रतिशत कम हुआ जबकि 5 से 17 माह के बच्चों में 46 प्रतिशत। विशेषज्ञों के अनुसार एक तो यह प्रतिरक्षा बहुत कम है और दूसरा कि इनमें से कई सारे मामलों में मलेरिया से बचाव आनुवंशिक कारणों से हुआ होगा।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति ने यह भी पाया कि प्रभावी होने के लिए ज़रूरी है कि इस टीके की चारों खुराक दी जाएं। विशेषज्ञों को शंका है कि कई देशों में शायद यह संभव नहीं होगा। विशेषज्ञ समिति के अध्यक्ष जॉन एब्रेमसन का कहना है कि जब तक हम चारों खुराक सुनिश्चित नहीं कर सकते तब तक इस टीके पर करोड़ों डॉलर खर्च करने का कोई मतलब नहीं है।

फिलहाल इस टीके की एक खुराक की कीमत 5 डॉलर है। अर्थात चार खुराकों की कीमत 20 डॉलर आएगी। यह किसी परिवार को कीटनाशक युक्त मच्छरदानी देने की लागत से 4 गुना अधिक है। दूसरे शब्दों में, इस टीके का उपयोग काफी महंगा साबित होगा। इसलिए इसे सार्वजनिक टीकाकरण में शामिल करने से पहले इसकी प्रभाविता को लेकर ज़्यादा आश्वस्त होने की ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***